महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था मुंबई संचलित

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैभववाडी जिल्हा–सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र.

NAAC Reaccredited with 'A' Grade (CGPA 3.08) & ISO 9001:2015 Certified

इतिहास विभाग व अंतर्गत गुणवत्ता हमी कक्ष (IQAC) आयोजित

आंतरविद्याशाखीय आनलाईन राष्ट्रीय परिषद–२०२२

भारताच्या जडणघडणीतील ७५ वर्षे – चळवळी व विकासाचे प्रवाह (१९४७ ते २०२१)

प्रमाणपत्र

श्री/श्रीमती/प्रा/डॉ. **शाहिद मुस्ताक मुल्ला, संशोधक विद्यार्थी, राज्यशास्त्र विभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर** यांनी **स्वतंत्र भारताच्या अमृत महोत्सवी वर्षानिमित्त** आयोजित करण्यात आलेल्या **"भारताच्या जडणघडणीतील ७५ वर्षे - चळवळी व विकासाचे प्रवाह (१९४७ ते २०२१)"** या विषयावर **आंतरविद्याशाखीय आँनलाईन राष्ट्रीय परिषद-२०२२,** मध्ये तज्ञ मार्गदर्शक/ निबंध वाचक/सहभागी प्रतिनिधी म्हणून सहभाग घेतला. **भारत विदेश नीती में एक्ट ईस्ट नीति** या विषयावर शोधनिबंध सादर केल्याबद्दल/ सहभागी झाल्याबद्दल हे प्रमाणपत्र आपणास सन्मानपूर्वक देण्यात येत आहे.

दि. २८ जानेवारी २०२२

प्रमाणपत्र नं- 14

प्रा.एस.एन.पाटील	डॉ.डी.एम.सिरसट	डॉ.सी.एस.काकडे
समन्वयक	IQAC समन्वयक	प्राचार्य

भारताच्या जडणघडणीतील ७५ वर्षे - चळवळी व विकासाचे प्रवाह (१९४७ ते २०२२)

मुख्य संपादक
प्राचार्य डॉ.सी.एस.काकडे

संपादक
प्रा. एस. एन. पाटील
प्रा. ए. एम. कांबळे (उपप्राचार्य)
डॉ. डी. एम. सिरसट

महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था मुंबई संचलित
आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
वैभववाडी जिल्हा- सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र.
मुंबई विद्यापीठ कायम संलग्नित
NAAC Reaccredited with 'A' Grade (CGPA 3.08) & ISO 9001:2015 Certified

महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था मुंबई संचलित

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैभववाडी जिल्हा-सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र.

NAAC Reaccredited with 'A' Grade (CGPA 3.08) & ISO 9001:2015 Certified

इतिहास विभाग व अंतर्गत गुणवत्ता हमी कक्ष (IQAC) आयोजित

आंतरविद्याशाखीय ऑनलाईन राष्ट्रीय परिषद-२०२२

भारताच्या जडणघडणीतील ७५ वर्षे - चळवळी व विकासाचे प्रवाह (१९४७ ते २०२१)

शुक्रवार दि. २८ जानेवारी २०२२

अनुक्रमणिका

1	SCIENCE AND TECHNOLOGY: BLESSING OR CURSE? Dr Michael Khindo*	1
2	BEACH SHACKS IN GOA: EMPOWERING THE RURAL ECONOMY Dr. Varsha V. Kamat	4
3	ISRO THE IMPRESSION OF INDIA IN SPACE COMMUNICATION: SPECIAL REFERENCE TO MARS MISSION Sanjay L Gaikwad*1, Ravindra D Morbekar1, Nandini N Gaikwad2, Pooja P Thakur2	9
4	शहरीकरणात शाश्वत विकास शिक्षण शिक्षणाची भूमिका श्री.योगेश खंडेराव पाटील , डॉ. गोविंदराव शंकराव कांबळे	13
5	भारतीय परराष्ट्र धोरणाचे शिल्पकार- पं. जवाहरलाल नेहरु प्रा.श्री.एस.एन.पाटील	17
6	DEFENSE MINISTER: YASHAWANTRAO CHAVAN Dr. Santosh Tukaram Kadam	25
7	मराठवाडा मुक्ती संग्राम – आर्य समाजाचे योगदान प्रा. रश्मी शिवाजी आडेकर	29
8	विसाव्या शतकातील प्रभावी व्यक्तीमत्व - इंदिरा गांधी प्रा.डॉ.व्ही.जी.भास्कर	38
9	THE POST-INDEPENDENCE TECHNOLOGICAL TRENDS IN THE MAKING OF INDIA Asst. Prof. Mr. P.M. Dhere	44
10	आमचं गाव, आमचा विकास उपक्रमा अंतर्गत ग्रामपंचायत विकास विशेष संदर्भ ग्रामपंचायत हिंगनोळे श्रीमती सरकाळे तेजश्री तानाजी	47
11	भारतीय शिक्षक शिक्षण- एक दृष्टीक्षेप रुपेश युवराज पाटील	51
12	नव भारताच्या जडणघडणीत पंडित जवाहरलाल नेहरूंचे योगदान सुनीताबाई भगवान पाटील	66
13	महाराष्ट्रातील शास्त्रीयनृत्य चळवळ आणि विकास निलीमा हिरवे	70
14	भारत विदेश नीती में एक्ट ईस्ट नीति शाहिद मुस्ताक मुल्ला	78

भारत विदेश नीती में एक्ट ईस्ट नीति

शाहिद मुस्ताक मुल्ला
संशोधक विद्यार्थी, राज्यशास्त्र विभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर.
Email:shahidmullasm93@gmail.com
Phone: 9665686971
Address: Market yard East Daulat Colony, Karad, Dist-Satara

प्रस्ताविक :

नवंबर २०१४ में घोषित 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी', 'लुक ईस्ट पॉलिसी' का ही उन्नत रूप है। यह विभिन्न स्तरों पर विशाल एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु एक राजनयिक पहल है। इस पॉलिसी के तहत द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तरों पर कनेक्टिविटी, व्यापार, संस्कृति, रक्षा और लोगों-से-लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ गहन और निरंतर संपर्क को बढ़ावा दिया जाता है। भारत की एक्ट ईस्ट नीति ने अब एक रणनीतिक आयाम ले लिया है। भविष्य में, भारत को आसियान के साथ अपनी कनेक्टिविटी परियोजनाओं को पूरा करने में फुर्तीला और तेज होना होगा, मजबूत रक्षा, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक संबंधों को विकसित करना होगा और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ अन्योन्याश्रितता पैदा करनी होगी। इसे अपने पड़ोस को सुरक्षित रखने के लिए, अपने समुद्री संचार को खुला रखने के लिए, और अपने स्वयं के आर्थिक विकास के लिए एक स्थिर और शांतिपूर्ण बाहरी वातावरण सुनिश्चित करने के लिए, जो कि इसके १.२५ बिलियन लोगों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है, अपने समान विचार वाले देशों के साथ काम करने की आवश्यकता होगी। दक्षिण-पूर्व एशिया भविष्य की आर्थिक प्रगति को दिशा देगा, और "एशियाई शताब्दी" का वाहक बनेगा। भारत इस विकासशील कहानी का एक अनिवार्य हिस्सा है।

उद्देश

१. भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी से एक्ट ईस्ट पॉलिसी तक विकास का अध्ययन करना।
२. एक्ट ईस्ट पॉलिसी का प्रयास का अध्ययन करना।
३. भारतीय परराष्ट्र नीती पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी का प्रभाव का अध्ययन करना।

लुक ईस्ट पॉलिसी :

भारत ने१९९० के दशक की शुरुआत में, 'लुक ईस्ट पॉलिसी' की एक नई अवधारणा आरंभ की,जो देश के उत्तर-पूर्व को भारत-प्रशांत क्षेत्र के प्रवेश द्वार में बदलने और भारत के विस्तारित पड़ोस के साथ मजबूत संबंध बनाने में मदद करने के लिए बनाई गई थी। वर्ष १९९२ के बाद जब प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने दक्षिण-पूर्व एशिया के लिये 'पूर्व की ओर देखो नीति' की घोषणा की तब से भारत इस क्षेत्र के साथ सभी मोर्चों जैसे - राजनयिक और सुरक्षा, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर साथ खड़ा रहा है।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी का विकास :

२०१४ के बाद भारतीय विदेश नीती में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीनें लुक इस्ट पॉलीसी का एक्ट ईस्ट पॉलिसी में परिवर्तन किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने सम्मेलन के दर्शकों से कहा कि उनकी सरकार ने भारत की लुक ईस्ट नीति को एक्ट ईस्ट नीति में बदलने को उच्च प्राथमिकता दी है, दर्शकों में विश्व के नेता भी शामिल थे।एक्ट ईस्ट नीति का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया और भारत-प्रशांत के अन्य देशों के साथ मजबूत व्यवसायिक और व्यापारिक संबंध बनाने के उद्देश्यों कोपूरा करना और भारत के उत्तर पूर्व स्थित राज्यों के लिए विकास के अवसर उत्पन्न करना है।इसलिए वाणिज्य, संस्कृति और संपर्कअर्थात् तीन सी भारत की वर्तमान एक्ट ईस्ट नीति के स्तंभ हैं। भारत की एक्ट ईस्ट नीति अपने पूर्वमुखी अभिविन्यास और भारत-प्रशांत के व्यापक दृष्टिकोण के साथ संबंधों के केंद्र में है। इन वर्षों में, इस क्षेत्र के लिए भारत का दृष्टिकोण- आसियान और एआरएफ, ईएएसऔर एडीएमएम+ जैसे इसके संबंधित ढांचे के साथ जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और प्रशांतद्वीपों सहित आगे के देशों के साथ व्यापक रणनीतिक जुड़ाव में बदल गया है।भारत और आसियान के बीच व्यापार और निवेश, संपर्क, ऊर्जा, संस्कृति, लोगों से लोगों के परस्पर संपर्क और समुद्री सुरक्षा सहित कई आर्थिक और रणनीतिक मुद्दों पर सहयोग बढ़ा है।

लुक ईस्ट पॉलिसी में 'दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संघ' (आसियान) तथा उनके आर्थिक एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया। पर 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी आसियान देशों के आर्थिक एकीकरण तथा पूर्वी एशियाई देशों के साथ सुरक्षा सहयोग पर केंद्रित है। भारत के प्रधानमंत्री ने 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी'के तहत 4C पर प्रकाश डाला है। इस में संस्कृति, वाणिज्य,कनेक्टिविटी,क्षमता निर्माण यह तत्व सम्म्लीत है। और इसमें सुरक्षा भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में बढ़ते चीनी हस्तक्षेप के संदर्भ में भारत द्वारा नौपरिवहन की स्वतंत्रता हासिल करना और हिंद महासागर में अपनी भूमिका स्पष्ट करना 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी की एक प्रमुख विशेषता है।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी कें तहत प्रयास :

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २०१५ में अपनी म्यांमार यात्रा के दौरान भारत की एक्ट ईस्ट नीति की औपचारिक घोषणा की। विभिन्न कार्यक्रमों में उन्होंने कहा कि भारत की एक्ट ईस्ट नीति बांग्लादेश से संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी समुद्री तट तक विस्तारित होगी। 'भारत-जापान एक्ट ईस्ट फोरम' वर्ष २०१७ में स्थापित किया गया था जिसका उद्देश्य भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और जापान की "फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक रणनीति" के तहत भारत-जापान सहयोग हेतु एक मंच प्रदान करना है। यह फोरम भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के आर्थिक आधुनिकीकरण के लिये विशिष्ट परियोजनाओं की पहचान करेगा, जिनमें कनेक्टिविटी, विकास संबंधी बुनियादी ढाँचे, औद्योगिक संपर्क और पर्यटन, संस्कृति एवं खेल संबंधी गतिविधियों के माध्यम से लोगों के बीच संपर्क जैसे कारक शामिल हैं।

जून २०१८ में सिंगापुर में शांगरी ला संवाद में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोर देकर कहा कि "भारत की एक्ट ईस्ट नीति ने आसियान के आसपास आकार लिया है और भारत-प्रशांत क्षेत्र की क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला में इसकी केंद्रीयता स्पष्ट है"। भारत-प्रशांत क्षेत्र का भारत की एक्ट ईस्ट

नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक अवसरों और चुनौतियों की एक विशाल सरणी का केंद्र है। उन्होंने कहा, "दक्षिण-पूर्व एशिया के दस देश भौगोलिक और सभ्यता दोनों अर्थों में दो महान महासागरों को जोड़ते हैं। इसलिए विशिष्टता, खुलेपन और आसियान की केंद्रीयता और एकता, नए भारत-प्रशांत के केंद्र में स्थित है। भारत, भारत-प्रशांत क्षेत्र को रणनीति या सीमित सदस्यों के संगठन के रूप में नहीं देखता है।"

भारत-प्रशांत की इस आसियान दृष्टि को हाल ही में अर्थात् जून २०१९ में अपनाया गया है। वास्तव में ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, भारत और जापान जैसे देशों ने भी भारत-प्रशांतक्षेत्र में सहयोग के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण और रणनीति अपनाई थी, इसलिए आसियान के इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे कुछ देश नहीं चाहते थे कि दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र को दरकिनार किया जाए और उन्हें इस नए भू-राजनीतिक निर्माण से अलग छोड़ दिया जाए।आसियान की दृष्टि में आसियान की केंद्रीयता की परिकल्पना की गई है, इसका उद्देश्य संवाद और भारत-प्रशांत सहयोग के कार्यान्वयन के लिए किसी नए तंत्र का निर्माण करना न होकर,पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन जैसी एशिया की वर्तमाननेतृत्व प्रणाली जैसे मंचों को मजबूत करना है।इसके अलावा, आसियान की दृष्टि अंतर्राष्ट्रीय कानून, खुलेपन, पारदर्शिता, समावेशिता के नियमों पर आधारित है और यह क्षेत्र में आर्थिक भागीदारी को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता स्वीकार करती है।इस संबंध में भारत-प्रशांत के अन्य देशों को संलग्न करने के लिए सहयोग के चार क्षेत्रों - समुद्री सहयोग, संपर्क, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों २०३० और आर्थिक विकास को आगे रखा गया है।

निष्कर्ष :

भारत ने सदियों से पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ व्यापक संपर्क रखा है। इनमें से कई देशों में भारतीय कला, संस्कृति और धर्म का उल्लेखनीय प्रभाव है। बौद्ध धर्म ने इस क्षेत्र में अपनी जड़ें मजबूती से जमा लीं, जबकि कुछ देशों में हिंदू धर्म का प्रभाव देखा गया। कलिंग के इन देशों से व्यापारिक संबंध थे और चोल साम्राज्य ने राजनीतिक और आर्थिक रूप से इनमें से कई देशों में कार्य किया। एशियाई संबंध सम्मेलन और बांडुंग सम्मेलन ने इस क्षेत्र के देशों को करीब लाने में मदद की। आसियान के साथ हमारी एक समूह के रूप में और इनके अलग-अलग घटकों के साथ एक बहुपक्षीय लाभप्रद साझेदारी है। फिर भी भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी की हालिया चुनौतिया है, जिसमे क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) समझौते से बाहर रहने के निर्णय एवं भारत की घरेलू आर्थिक मंदी ने क्षेत्र के देशों को निराश किया, अधिकांश आसियान देशों की जनसंख्या नृजातीय चीनी, इस्लाम, बौद्ध या ईसाई धर्म का पालन करते हैं। भारत में हिंदू बहुसंख्यकवाद के बारे में बढ़ती चिंता ने इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड और सिंगापुर जैसे देशों में नागरिक समाज के रवैये को प्रभावित किया है। इसके अलावा, भारत ने "बौद्ध कूटनीति" को सॉफ्ट पावर रूप में आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन इस क्षेत्र में अंतर-धार्मिक तनाव बढ़ने के कारण इसकी तरफ आसियान देशों का आकर्षण अधिक नहीं हुआ है और कोविड -१९ महामारी का प्रभाव: महामारी की चुनौती को चीन ने कुशलता से संभाला है जबकि भारत में स्थिति बिगड़ती जा रही है। इस कारण क्षेत्र के नृजातीय चीनी समुदायों और चीन के प्रति आसियान देशों में तेज़ी से उदार दृष्टिकोण का विकास हो रहा है एवं इन देशों में

चीन समर्थक भावना उत्पन्न हुई है। इसलिये एक्ट ईस्ट पॉलिसी में निहित बेहतरीन इरादों के बावजूद इसका प्रभाव कमजोर हो रहा है।

संदर्भ सूची :

1. Manmohini Kaul (Author), Anushree Chakraborty, India's Look East to Act East Pentagon Press new Delhi, 2015
2. Samir Kumar Das, India's Look East Policy: Imagining a New Geography of India's Northeast, India Quarterly Vol. 66, No. 4 (December 2010), pp. 343-358 (16 pages) Published By: Sage Publications, Inc.
3. Amitava Acharya, India's 'Look East' Policy,2015
4. https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials
5. Political Weekly

महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था मुंबई संचलित

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैभववाडी जिल्हा- सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र.

कार्यकारी मंडळ

मा. नाम. विनोदजी श्रीधर तावडे - अध्यक्ष

श्री. विश्वनाथ रा. रावराणे - उपाध्यक्ष
श्री. दयानंद पा. रावराणे - सचिव
श्री. विजय बा. रावराणे - सहसचिव
श्री. सदानंद द. रावराणे - सदस्य
श्री. गणपत दा. रावराणे - सदस्य
श्री. चंद्रशेखर म. रावराणे - सदस्य
श्री. जयसिंग प. रावराणे - सदस्य
श्री. रघुनाथ फ. रावराणे - कार्यध्यक्ष
श्री. शैलेंद्र स. रावराणे - सहसचिव
श्री. अर्जुन बा. रावराणे - कोषाध्यक्ष
श्री. प्रभानंद शं. रावराणे - सदस्य
श्री. देवेंद्र ता. रावराणे - सदस्य
श्री. यशवंत पा. रावराणे - सदस्य
श्री. सत्यवान बा. रावराणे - सदस्य

म. प्र. शि. स. स्थानिक समिती

श्री. सज्जन वि. रावराणे - अध्यक्ष
श्रीमती. वीणा व. रावराणे - सदस्य
श्री. प्रमोद पुं. रावराणे - सचिव
श्री. महेश धों. रावराणे - खजिनदार

संयोजन समिती

प्राचार्य डॉ. सी. एस. काकडे - अध्यक्ष
प्रा. एस. एन. पाटील - समन्वयक
श्री. एस. एस. रावराणे - अधिक्षक
उपप्राचार्य प्रा. ए. एम. कांबळे
डॉ. डी. एम. सिरसट - समन्वयक (IQAC)

सदस्य

प्रा. एस. सी. राडे
प्रा. पी. एम. ढेरे
प्रा. एस. बी. पाटील
प्रा. आर. बी. पाटील
डॉ. डी. एस. कोरगावकर
डॉ. व्ही. बी. गोपुला
प्रा. व्ही. व्ही. शिंदे

Published by
Lulu.com
3101, Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

9 781458 322760